International Journal of Education and Science Research Review P-ISSN 2349-1817, E- ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org August- 2017, Volume-4, Issue-4 Email- editor@ijesrr.org

जनपद मेरठ के उच्च माध्यमिक स्तर के स्ववित्त पोषित एवं वित्त पोषित विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन

Dr.Anita Gupta
Lecturer, B.Ed. Department
I.N.P.G. College, Meerut

सार–
शिक्षा शास्त्रियों का मानना है कि मूल्यों का संकट तब तक बना रहेगा जब तक मूल्यों की शिक्षा का दायित्व शिक्षक नहीं वहन करता है। शिक्षक कक्षा में अपना विषय पढ़ाकर या किसी शीर्षक पर व्याख्यान देकर प्रायः अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। शिक्षा को वृत्ति सामाजिक प्रणाली की एक उप प्रणाली मानकर वे सोच लेते हैं कि जहाँ तक जीवन मूल्यों का प्रश्न है उससे उनका कोई विशेष सरोकार नहीं है और ये मूल्य तो छात्र समाज से स्वयमेव ग्रहण करते हैं। उनकी इस मान्यता में सत्य का अंश होते हुए भी यह देशहित में नहीं हे हम शिक्षकों ने राजनीतिक नेताओं को भारतीय मूल्यों को रौंदते हुए देखा है और अब समय आ गया है कि छात्र और शिक्षक मिलकर मूल्यों की रक्षा के अभियान में आगे आएँ क्योंकि छात्र और शिक्षक दो ध्रुवों के समान हैं जिससे यह संसार सान रूपी प्रकाश से प्रज्जवलित होता है अतः छात्र आर शिक्षकों में मूल्यों का होना परमावश्यक है। मूल्यों की सहायता से ही हम अपने परिवार, समाज, राज्य, देश, संसार व प्रकृति की रक्षा कर सकते हैं।

प्रस्तावना–
शिक्षा देश की रीढ़ है। जिस प्रकार विकृत रीढ़ से एक व्यक्ति स्वस्थ नहीं कहला सकता, उसी प्रकार विकृत शिक्षा–व्यवस्था से देश का निर्माण नहीं हो सकता। वर्तमान विश्व–समाज की दशा को देखकर यह कहना गलत नहीं है कि आज की शिक्षा–व्यवस्था में कहीं न कहीं, कोई न कोई कमी अवश्य है। अपने ही देश की ओर अगर हम दृष्टिपात करें तो पायेंगे कि राष्ट्रीय नैतिक चरित्र का अभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। अधिकांश शिक्षक, किस प्रकार अधिक से अधिक धन कमाया जा सके, इस चक्कर में पड़े हैं। ऐसा क्यों? इसका मुख्य कारण है – शिक्षा में मूल्य शिक्षा का अभाव। यदि शिक्षकों को मूल्यों का वास्तविक ज्ञाज होगा तो समाज से अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, शोषण, पापाचार और पक्षपातिता जैसी बुराईयाँ दूर होगी। समाज में सुख और शान्ति का साम्राज्य स्थापित होगा। मनुष्य–मनुष्य का अन्तर समाप्त होगा। व्यक्ति में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना का विकास होगा। आज मूल्यों की शिक्षा की माँग ने शिक्षा में अनुसंधान के क्षत्र में नई हलचल पैदा कर दी है। शैक्षिक नवचारों तथा मूल्यों के नये–नये वर्गीकरणों ने मूल्यों के विकास में अनुसंधान के नये आयाम खोल दिये हैं। मूल्यों से सम्बन्धित अनुसंधान मुख्यतः दो प्रकार के हैं –

1. ज्ञान की अभिकल्पना को बढ़ाने वाले तथा
2. शिक्षकों की समस्याएँ हल करने वाले।

विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तरों के, भिन्न–भिन्न प्रकार के विद्यालयों में पढ़ने वाले, विभिन्न धर्मों के, विभिन्न विषयों का अध्ययन करने वाले, शहरी व ग्रामीण, वंचित व सुविधा प्राप्त बालकों व बालिकाओं के मूल्यों का अन्तर ज्ञात करने के लिए अनेक अनुसंधान किये जा रहे हैं व हो चुके हैं। इनमें प्रायः धार्मिक, सामाजिक,प्रजातांत्रिक, सौन्दर्यपरक, ज्ञानात्मक, आर्थिक, राजनैतिक व सैद्धान्तिक आदि मूल्यों का अध्ययन किया गया है। शिक्षक समाज, भविष्य व राष्ट्र के निर्माता होते हैं। इनका मूल्यों से परिपूर्ण होना आवश्यक है। इसके लिए शिक्षकों के मूल्यों पर अनुसंधान की आवश्यकता है। परन्तु इसके लिए यह ज्ञात होना आवश्यक है कि शिक्षा के किस स्तर पर अभी अनुसंधान नहीं हुए।

चूँकि माध्यमिक स्तर जो प्राथमिक व उच्चस्तर की शिक्षा प्रक्रिया के बीच की कड़ी है। अतः माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों को मूल्यों से युक्त होना चाहिए। विद्यालय स्तर पर शिक्षकों के मूल्यों पर विभिन्न प्रकार के अनुसंधान हो चुके हैं। शिक्षकों से सम्बन्धित अनुसंधानों का अवलोकन करने के बाद हमारे सामने एक समस्या का उद्भव हुआ कि अभी तक माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन नहीं किया गया। चूँकि माध्यमिक स्तर के शिक्षक, शिक्षण प्रक्रिया में एक धुरी के समान होते है, जहाँ पर सारी शिक्षण प्रक्रिया केन्द्रित होती है। अतः यहाँ पर हम माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक

अध्ययन करेंगे। जिससे उनके मूल्यों में आने वाली रूकावट का निदान किया जा सके और शिक्षण प्रक्रिया को समाज व राष्ट्र के अनुरूप संचालित किया जा सके।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

मूल्य हमारे जीवन के आधार है। मूल्यों के बिना हम बजर भूमि के समान हैं, जिस प्रकार बंजर भूमि पर खेती नहीं की जा सकती है, उसी प्रकार मूल्यहीन व्यक्ति अपने जीवन को समाज के साथ समायोजित नहीं कर सकता। आज चारों ओर भ्रष्टाचार, लूट, डकैती, बलात्कार आदि का बोलबाला है। चारों ओर अव्यवस्था व्याप्त है। शिक्षक आर विद्यार्थियों पर प्रतियोगिता रूप दानव हावी हो गया है, जिससे वे अपने मूल्यों को खोते चले जा रहे हैं। उनके पास इतना समय नहीं है कि वे अपनी संस्कृति से परिचित हो सके। हमारी संस्कृति ही हमारे मूल्यों का घर है, अर्थात् संस्कृति हमारे मूल्यों का सशक्त स्रोत है। अतः आज आवश्यकता है कि हम अपनी संस्कृति से परिचित हो, अपने दायित्व को समझें, हमें अपने कर्तव्यों की जानकारी हो। जब तक हमें अपने कर्तव्यों और मूल्यों की जानकारी नहीं होगी, तब तक हम और हमारा समाज उन्नति के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकता।

शिक्षक हमारे समाज का एक अभिन्न अंग है, जो समाज को दिशा निर्देश देता है; हमारे समाज को शिक्षित करता है; अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय व भावात्मक एकता में सहायक होता है। अतः शिक्षकों को मूल्यों से परिपूर्ण होना चाहिए। यदि शिक्षकों में मूल्यों की कमी है, तो शिक्षकों को शिक्षक शिक्षा के माध्यम से मूल्य शिक्षा दी जाये। आज हमारे शिक्षाविदों को यहय जानने की आवश्यकता है कि हमारे शिक्षकों में मूल्यों का विकास कहाँ तक हो पाया है। वे किस क्षेत्र में कमजोर है, जिससे उनकी इस कमजोरी को दूर किया जा सके। अतः यह परमावश्यक है कि शिक्षकों के मूल्यों का परीक्षण किया जाये; जिससे यह ज्ञात हो सके कि शिक्षकों में मूल्यों का विकास कहाँ तक हुआ और कहाँ तक उनका परिमार्जन किया जा सकता है। शिक्षकों को मूल्यों से परिपूर्ण होना आवश्यक है, क्योंकि शिक्षक ही राष्ट्र के छात्र रूपी नागरिकों को तैयार करता है; और यही नागरिक राष्ट्र को उन्नति के मार्ग पर आगे ले जा सकते हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

जिस प्रकार जीवन में कोई भी कार्य उद्देश्य रहित नहीं होता, उसी प्रकार निश्चित उद्देश्यों के अभाव में अनुसन्धान कार्य को सुचारू रूप से पूर्ण नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक अनुसन्धान कार्य का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। अतएव अनुसन्धान कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व यह आवश्यक हो जाता है कि उसके निश्चित उद्देश्यों को निर्धारित किया जाये। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर अध्ययन किया जाता है –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन का सीमांकन या अध्ययन की परिसीमाएँ–

शिक्षकों द्वारा शिक्षण कार्य सम्पूर्ण देश में होने के कारण सम्पूर्ण राष्ट्र शोधकार्य का विषय क्षेत्र है। भारत जैसे विशाल देश में इस समस्या पर शोधकार्य के लिए पर्याप्त समय, साधन एवं धन का होना आवश्यक है।

शोधकर्ता की मनसा पूरे प्रदेश के उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों व छात्रों के मूल्यों के तुलनात्मक अध्ययन करने की थी। किन्तु धन, समय और अध्ययन की तत्कालिक आवश्यकता को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने इसका परिसीमन अधिक विस्तारित न करके कतिपय बिन्दुओं पर इस प्रकार किया है–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में भौगोलिक दृष्टि से केवल उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद को लिया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल निजी (स्ववित्तपोषित) व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों को ही लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल निजी (स्ववित्तपोषित) व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों व छात्रों को ही

न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

दिशाविहीन कथन–

इस परिकल्पना को शून्य परिकल्पना (Null-Hypothesis) भी कहते हैं। इस परिकल्पना का उपयोग केवल सांख्यिकी की सार्थकता के परीक्षण के लिए किया जाता है।

अनुसन्धान कर्ता ने प्रस्तुत शोध में आवश्यकता, उद्देश्य एवं क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए समस्या के लिए कुछ निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया है –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''सैद्धान्तिक मूल्य'' के क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''आर्थिक मूल्य'' के क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''सौन्दर्य मूल्य'' के क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों व सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''सामाजिक मूल्य'' के क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन शोधकर्ता को नवीनतम ज्ञान के शिखरों पर ले जाता है, जहाँ उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित निष्कर्षों एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहाँ रिक्तियाँ हैं, कहाँ निष्कर्ष–विरोध हैं, कहाँ अनुसन्धान की पुनः आवश्यकता है। जब वह दूसरे शोधकर्ताओं के अनुसन्धान कार्य की जाँच एवं मूल्यांकन करता है तो उसे बहुत–सी अनुसन्धान विधियों, बहुत–से तथ्यों, सिद्धान्तों, संकल्पनाओं एवं सन्दर्भ ग्रन्थों का ज्ञान होता है, जो उसके अपने अनुसन्धान में उपयोगी सिद्ध होते हैं। बोर्ग के अनुसार ''शैक्षिक अनुसन्धान में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किसी अनुसन्धानकर्ता के लिए समस्या के मूल तक पहुँचने का महत्वपूर्ण साधन है।''

वर्मा एवं अन्य (2007) ने अनुसूचित जाति और गैर अनुसूचित जाति के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में हरियाणा के सिरसा जिले के सीनियर सेकेण्डरी विद्यालयों के कक्षा 12 के 120 छात्रों को चुना गया। इनमें 60 अनुसूचित जाति तथा 60 गैर अनुसूचित जाति के छात्र थे। उपकरण के रूप में रोरी और वर्मा का ''पर्सनल वैल्यू क्वेश्चनायर'' (हिन्दी रूपान्तरण) का उपयोग किया गया। शोध के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार रहे– (1) गैर अनुसूचित जाति के पुरुष छात्रों का आर्थिक, भोगवादी संस्कृति, शक्ति और पारिवारिक प्रतिष्ठा की ओर झुकाव अधिक पाया गया। (2) सौन्दर्यात्मक, आर्थिक समझ, भोगवादी संस्कृति, शक्ति और स्वास्थ्य मूल्यों पर गैर अनुसूचित जाति की महिला छात्राओं को अनुसूचित जाति की महिला छात्राओं की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक मध्यमान प्राप्त हुए। (3) अनुसूचित जाति के भीतर पुरुष छात्रों के सामाजिक और ज्ञानात्मक मूल्यों तथा महिला छात्रों में पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य की अधिकता पायी गई। (4) गैर अनुसूचित जाति की महिला छात्रों में पुरुष छात्रों की तुलना में धार्मिक, सौन्दर्यात्मक और ज्ञानात्मक मूल्यों की अधिकता पाई गई।

दास (2009) ने उड़िया के माध्यमिक स्कूल पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में मूल्य शिक्षा की सम्भावना का अध्ययन किया। अध्ययन का विषय दार्शनिक प्रकृति का था। अतः दार्शनिक विधियां अपनाई गईं। आँकड़ों के लिए पुस्तकालय अध्ययन किया गया। शोध के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार रहे– (1) विभिन्न रिपोर्टों तथा विभिन्न समितियों और संगोष्ठियों के सुझावों से मूल्यों के प्रमुख प्रकार चिन्हित किये गये। (2) विभिन्न विद्यालयी विषयों के मूल्य भार भिन्न पाये गये। सभी विषयों को मिलाकर कुल 166 मूल्य पाये गये। चार अन्य मूल्य थे। अभिभावक–शिक्षक सम्बन्ध, एक आध्यात्मिक मूल और संस्कार एक सांस्कृतिक मूल्य। (3) सभी श्रेणियों में उपेक्षित मूल्यों के बीच एक धनात्मक जुड़ाव और सह सम्बन्ध पाया गया। (4) कुछ मूल्य जैसे दूसरों की सेवा, सामान्य अच्छाई, सहयोग, सहायता की भावना, अनुशासन, वैश्विक प्रेम आदि पर अधिक बल दिया गया। (5) मूल्यों की प्राथमिकताओं में असन्तुलन पाया गया। (6) सेकेण्डरी स्कूलों की पाठ्यपुस्तकों में मूल्यों का कोई प्रत्यक्ष संकेत नहीं पाया गया।

शुक्ला (2010) ने कामकाजी और घरेलू शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बीच मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रतिदर्श में 100 महिलाएं (50 शिक्षित और 50 अशिक्षित) तथा 100 शिक्षित महिलाएं (50 कामकाजी और 50 घरेलू) कानपुर शहर के विभिन्न क्षेत्रों से यादृच्छिक रूप से चुनी हुई। उपकरण के रूप में जी०पी० शेरी और आर०पी० वर्मा का पर्सनल वैल्यू क्वेश्चनायर का उपयोग किया गया। शोध के प्रमुख निष्कर्ष रहे– (1) सामाजिक, राजनीतिक और स्वास्थ्य मूल्यों के प्रति जागरूकता के सम्बन्ध में शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया किन्तु धार्मिक मूल्यों में उनमें अन्तर पाया गया। (2) शिक्षित कामकाजी महिलाओं का दृष्टिकोण अशिक्षित तथा घरेलू महिलाओं की तुलना में भौतिकवादी पाया गया। (3) यह पाया गया कि शिक्षित तथा अशिक्षित महिलायें अपनी पारिवारिक प्रतिष्ठा के प्रति अधिक सचेत थी और ये महिलायें शिक्षित कामकाजी महिलाओं की तुलना में नई तकनीकी का अपनाने के मामले में जागरूक थी। (4) शिक्षित, अशिक्षित, घरेलू एवं कामकाजी महिलाएं सौन्दर्यात्मक मूल्यों के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण रखती थी।

सिंह एवं गुप्ता (2012) ने मूल्यों एवं बुद्धि के कुछ व्यक्तित्व निर्धारकों का अध्ययन किया। पटना के विभिन्न विद्यालयों के कक्षा 11 में अध्ययनरत 110 छात्रों (50 पुरुष व 60 महिला) के न्यादर्श पर यह अध्ययन केन्द्रित था। जलोटा का सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण एवं ओझा के मूल्य अध्ययन के मापन उपकरणों का प्रयोग किया गया। शोध के प्रमुख निष्कर्ष थेः– (1) न्यूरोटिसिज्म व सैद्धान्तिक, सौन्दयात्मक व धार्मिक मूल्यों से धनात्मक सम्बन्ध पाया गया जबकि इवस्ट्रावर्जन का सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक मूल्यों से धनात्मक सम्बन्ध पाया गया। (2) छात्राओं में धार्मिक, सामाजिक व सौन्दर्यात्मक मूल्यों के लिए प्राथमिकता पायी गयी जबकि छात्रों में सैद्धान्तिक, राजनीतिक व आर्थिक मूल्यों के लिए प्राथमिकता पायी गयी।

विश्लेषण एवं अर्थापन

परिकल्पना नं.1–उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''सैद्धान्तिक मूल्य'' क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों की तुलना करने के लिए अध्ययन किये गये, आंकड़ों का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–मूल्य की गणना की गई है, जिनका सारांश निम्न तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका नं० 1

निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारो (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य सैद्धान्तिक मूल्य पर अन्तर की सार्थकता

मूल्य	निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=50		निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=50		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
सैद्धन्तिक मूल्य	86.9	7.0035	86.82	4.675	0.7731

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य सैद्धान्तिक मूल्य पर प्राप्त टी–मूल्य (.7731) है, जो सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर तालिका मूल्य से कम है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना नं. 1 स्वीकृत हुई। इसका तात्पर्य यह है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य सैद्धान्तिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर नहीं है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों में सैद्धान्तिक मूल्य एक समान रूप से विकसित हैं; तथा जो अन्तर इनके मध्यमानों में है उसकी सांख्यिकी दृष्टिकोण से कोई सार्थकता नहीं है।

परिकल्पना नं.2– उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''आर्थिक मूल्य'' क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं० 2

निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य सैद्धान्तिक मूल्य पर अन्तर की सार्थकता

मूल्य	निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=50		निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=50		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
आर्थिक मूल्य	86.9	7.0035	86.82	4.675	0.7731

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य आर्थिक मूल्य पर प्राप्त टी–मूल्य (.002) है, जो सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर तालिका मूल्य से कम है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना नं. 2 स्वीकृत हुई। इसका तात्पर्य यह है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य आर्थिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर नहीं है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों में आर्थिक मूल्य एक समान रूप से विकसित हैं; तथा जो अन्तर इनके मध्यमानों में है उसकी सांख्यिकी दृष्टिकोण से कोई सार्थकता नहीं है।

परिकल्पना नं.3–उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''सौन्दर्यात्मक मूल्य'' क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं० 3

निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य सौन्दर्यात्मक मूल्य पर अन्तर की सार्थकता

मूल्य	निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=50		निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=50		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
सौन्दर्यात्मक मूल्य	89.32	6.8189	95.06	5.1697	4.744

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य सौन्दर्यात्मक मूल्य पर प्राप्त टी–मूल्य (4.744) है, जो सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर तालिका मूल्य से अधिक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना नं. 3 अस्वीकृत हुई। इसका तात्पर्य यह है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य सौन्दर्यात्मक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। तत्पश्चात तालिका में प्रदर्शित मध्यमानों की तुलना करने से स्पष्ट होता है कि सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों का मध्यमान (95.06), निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों का मध्यमान (89.32) से अधिक है। इसका अर्थ यह है कि निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों में सौन्दर्यात्मक मूल्य अधिक विकसित है।

परिकल्पना नं.4–उच्च माध्यमिक स्तर के निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के ''सामाजिक मूल्य'' क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं० 4

निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य सामाजिक मूल्य पर अन्तर की सार्थकता

मूल्य	निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=50		निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षक N=50		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
सामाजिक मूल्य	87.46	6.968	91.38	9.2374	2.96

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य सामाजिक मूल्य पर प्राप्त टी–मूल्य (2.96) है, जो सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर तालिका मूल्य से अधिक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना नं. 4 अस्वीकृत हुई। इसका तात्पर्य यह है कि निजी (स्ववित्तपोषित) एवं सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य सामाजिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। तत्पश्चात तालिका में प्रदर्शित मध्यमानों की तुलना करने से स्पष्ट होता है कि सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों का मध्यमान (91.38), निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों का मध्यमान (89.32) से अधिक है। इसका अर्थ यह है कि निजी (स्ववित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में सरकारी (वित्तपोषित) विद्यालयों के शिक्षकों में सामाजिक मूल्य अधिक विकसित है।

निष्कर्ष–

अतः प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों को प्रस्तुत करने से शोधार्थी का तात्पर्य यह है कि यदि हमें ''सबके लिए शिक्षा'' व ''ऊँच–नीच'' के भेदभाव को मिटाने का संकल्प पूर्ण करना चाहते हैं, तो सरकार को सभी क्षेत्रों में समान सुविधायें उपलब्ध करानी होगी। जिससे कि इन सुविधाओं का लाभ उठाकर प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित शिक्षक तथा छात्र अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित कर सके एवं समान रूप से उन्नत कर अपने विद्यालय, परिवार, समाज व राष्ट्र को गौरवान्वित कर सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. पाण्डेय, रामशकल; तृतीय संस्करण : 2010; ''मूल्य शिक्षण'' विनोद पुस्तक मन्दिर; रवि मुद्रणालय, आगरा–2, पृष्ठ संख्या–174
2. भट्टाचार्य, जी०सी०; द्वितीय संस्करण : 2006/07; ''अध्यापक शिक्षा''ए विनोद पुस्तक मन्दिर; राकेश ग्राफिक प्रिन्टर्स, आगरा; पृष्ठ संख्या–532
3. डॉ० लाल; जैन, वशिष्ठ, के०सी०; संस्करण : 2012, ''यू०जी०सी० नेट/जे०आर०एफ०/स्लेट, शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता'' , उपकार प्रकाशन, आगरा–2
4. त्यागी, जी०एस०डी०; तेईसवाँ संस्करण : 2005/2006, ''शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा; पृष्ठ संख्या–808
5. स्वरूप सक्सेना, एन०आर०; संस्करण : 2007, ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'', विनय रखेजा द्वारा आर० लाल बुक डिपो, मेरठ; पृष्ठ संख्या–944
6. भाटिया, के०के०; नारंग, सी०एल०; संस्करण : 2006, ''शिक्षा के दर्शन शास्त्रीय तथा समाजशास्त्रीय आधार'', टण्डन पब्लिकेशन लुधियाना, पृष्ठ संख्या–470
7. मालवीय, राजीव; संस्करण (प्रथम) : 2006, ''शिक्षा के नूतन आयाम'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद; पृष्ठ संख्या–254
8. लाल, रमन बिहारी; सोलहवाँ संस्करण : 2005–2006, ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'', रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ; पृष्ठ संख्या–699